गोपाल राजू (वैज्ञानिक)मानस श्री

अ.प्रा. राजपत्रित अधिकारी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की-247667 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल : 09760111555

दुःख दारिद्रय निवारक चमत्कारी उपाय

अभी अकेला अपने चेतक स्कूटर पर खारदुग्ला, लददाख तंत्र की खोज में गया था। यह दुनिया का मोटर मार्ग वाला सबसे ऊँचा दर्रा है। लोग नहीं, मैं स्वयं अचम्भा करता हूँ कि कौन सी पराशक्ति मुझ जैसे निरीह, अकिचंन को वहॉ तक ले गयी।

इस तंत्र का विस्तृत विवरण मुझे खारदुग्ला पास भ्रमण के समय एक अनोखे बौद्ध भिक्षु द्वारा मिला था। अनोखा इसलिए कि उन्होंने स्वयं मुझे मेरे नाम से पुकार कर बुलाया। हल्की फुल्की चर्चा हुई। कहने लगे बेटा तुम मन, बुद्धि तथा कर्म से इस क्षेत्र में लिप्त हो। और भी अधिक प्रयास करो कि लोग भक्ति मार्ग से जुड़ते हुए केवल आवश्यकतानुसार ही धनदायक उपाय करें।

मैंने भरसक प्रयास किया कि वह कुछ तो मेरे हाथ से ग्रहण कर लें। परन्तु अकस्मात् वह पता नहीं कहॉ लुप्त हो गये। आज भी सोचता हूँ तो लगता कि उनका मिलना विश्वास न करने योग्य एक स्वप्न मात्र तो नहीं था?

उपाय के लिए रविपुष्य नक्षत्र (जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो) चुनिए इस दिन कहीं सिद्ध भैरव जी के मन्दिर से उनके चरणों की कालिमा एकत्र कर लें। इसे स्याही की तरह प्रयोग करना है। एक साफ-सा आयताकार भोजपत्र ले लें। इस पत्र पर यंत्र अंकित करना है। सिरस के वृक्ष की एक लकड़ी से कलम बना लें। यह न मिले तो अनार के वृक्ष की लकड़ी से भी कलम बना सकते हैं।

भोजपत्र पर शतरंज के कोष्ठकों की तरह 64 कोष्ठक बना लें। प्रत्येक कोष्ठक में क्रमशः एक-एक योगिनी का नाम अंकित कर लें। लिखने का क्रम बाएं से दाएं तथा नीचे से ऊपर की ओर रहे, इसका ध्यान रखें। यदि सक्षम हैं तो यह यंत्र तांबे, चांदी अथवा सोने की शीट पर अंकित करवाकर प्राण-प्रतिष्ठा कर लें। 64 योगिनीयों के नाम क्रमशः निम्न प्रकार हैं।

1.दिव्ययोगिनी, 2. महायोगिनी, 3. सिद्धयोगिनी, 4. गणेश्वरी, 5. प्रेताक्षी, 6. डाकिनी, 7. काली, 8. कालरात्रि, 9. निशाचरी, 10. हुंकारी, 11. रूद्रवैताली, 12. खर्परी, 13. भूतयामिनी, 14. ऊर्ध्वकेशी, 15. विरुपाक्षी, 16. शुष्कांगी, 17. मॉसभोजनी, 18. फेत्कारी, 19. वीरभद्राक्षी, 20. धूम्राक्षी, 21. कलहप्रिया, 22. रक्ता, 23. घोररक्ताक्षी, 24. विरुपाक्षी, 25. भयंकरी, 26. चौरिका, 27. मारिका, 28. चंडी, 29. वाराही, 30. मुंडधारिणी, 31. भैरवी, 32. चक्रिणी, 33. क्रोधा, 34. दुर्मुखी, 35. प्रेतवाहिनी, 36. कंटकी, 37. दीर्घलंबौष्ठी, 38. मालिनी,

39. मंत्रयोगिनी, 40. कालाग्रि, 41. मोहिनी, 42. चक्री, 43. कंकाली, 44. भुवनेश्वरी, 45. कुंडलाक्षी, 46. जुही, 47. लक्ष्मी, 48. यमदूती, 49. करालिनी, 50. कौशिकी, 51. भक्षिणी, 52. यक्षी, 53. कौमारी, 54. यंत्रवाहिनी, 55. विशाला, 56. कामुकी, 57. व्याघ्री, 58. याक्षिणी, 59. प्रेतभूषणी, 60. धूर्जटा, 61. विकटा, 62. घोरा, 63. कपाला, 64. लांगली।

कालरात्रि	**शुष्कांगी**	**विरुपाक्षी**	**चक्रिणी**	**कालागि**	**यमदूती**	**कामुकी**	**लांगली**
काली	**विरुपाक्षी**	**घोररक्ताक्षी**	**भैरवी**	**मंत्रयोगिनी**	**लक्ष्मी**	**विशाला**	**कपाला**
डाकिनी	**ऊर्ध्वकेशी**	**रक्ता**	**मुंडधारिणी**	**मालिनी**	**जुही**	**यंत्रवाहिनी**	**घोरा**
प्रेताक्षी	**भूतयामिनी**	**कलहप्रिया**	**वाराही**	**दीर्घलंबौष्ठी**	**कुंडलाक्षी**	**कौमारी**	**विकटा**
गणेश्वरी	**खर्परी**	**धूम्राक्षी**	**चंडी**	**कंटकी**	**भुवनेश्वरी**	**यक्षी**	**धूर्जटा**
सिद्धयोगिनी	**रूद्रवैताली**	**वीरभद्राक्षी**	**मारिका**	**प्रेतवाहिनी**	**कंकाली**	**भक्षिणी**	**प्रेतभूषणी**
महायोगिनी	**हुंकारी**	**फेत्कारी**	**चौरिका**	**दुर्मुखी**	**चक्री**	**कौशिकी**	**याक्षिणी**
दिव्ययोगिनी	**निशाचरी**	**मॉसभोजनी**	**भयंकरी**	**क्रोधा**	**मोहिनी**	**करालिनी**	**व्याघ्री**

चौसठ योगिनी यंत्र

यंत्र के सूखने तक प्रतीक्षा करें। जिस क्रम से नाम अंकित किए थे उसी क्रम से प्रत्येक कोष्ठक में एक चुटकी नागकेसर चढ़ाएं। यथा भक्ति यंत्र की धूप-दीप से पूजा अर्चना करें। अनामिका उंगली का पोर दबाते हुए यह उंगली अब पहले कोष्ठक में रखें तथा

इसमें अंकित पहला नाम दिव्ययोगिनी 64 बार **"ॐ दिव्ययोगिनी नमः"** जपें। दूसरी बार दूसरे कोष्ठक पर उंगली रखकर 64 बार दूसरा नाम महायोगिनी जपें, **"ॐ महायोगिनी नमः"**। इसी प्रकार यंत्र के प्रत्येक कोष्ठक में उंगली रखते हुए वह नाम 64-64 बार जपें। अन्त में 11 माला **"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं हंसौः चतुःषश्ठियोगिनोभ्यो नमः"** जप करके यंत्र को ऐसे ही सुरक्षित रख लें। अगले दिन यंत्र बनाने की प्रक्रिया छोड़कर 64 कोष्ठकों में उंगली रखकर 64-64 बार नाम जप करें और अन्त में योगिनी महामंत्र की ग्यारह माला जप करें। यह तांत्रिक अनुष्ठान 64 दिन चलेगा। चौसठवें अर्थात् अन्तिम दिन मंत्र जप के बाद योगिनी महामंत्र की एक माला से हवन करें। हवन सामग्री में कमलगट्टे, गूगुल, जौ, बताशे, घृत तथा पंचमेवा अवश्य मिला लें। इन चौसठ दिनों में नित्य गुग्गुल धूनी करें। शान्तिकुंज हरिद्वार में गूगुल की अगरबत्ती मिलती हैं, यह उपयोग करें तो थोड़ी सुविधा हो जाएगी। अन्तिम दिन एक, दो अथवा अधिक, अपने सामर्थ्य अनुसार सौभाग्यशाली स्त्रियों को भोजन-दक्षिणा से प्रसन्न करके उनकी आशीष लें।

यंत्र को सुन्दर सा फ्रेम करवाकर अपने आवास, दुकान फैक्ट्री आदि में उत्तर दिशा वाली दीवार में स्थापित कर दें अथवा टांग दें। पुष्प की माला सदैव इस यंत्र पर चढ़ी रहे। यंत्र पर चढ़े हुए नागकेसर एक लाल कपड़े में बांधकर यंत्र के पास ही रख लें। सम्भव हो तो नित्य योगिनी महामंत्र की एक माला जप करें।

आप कुछ ही समय में चमत्कारी रुप से अपने तथा अपने आस-पास के वातावरण में परिवर्तन अनुभव करने लगेंगे। ऋण का भार, व्यापार अथवा अन्य कार्य का अकस्मात् बाधित हो जाना, धन संपदा के लिए लोगों से बैर, भूमि-भवन आदि के क्रय-विक्रय में व्यवधान आदि अनेक बातों से आप अपने को मुक्त कर शान्तिमय जीवन जीने लगेंगे।

यह उपाय सरलतम उपायों की श्रंखला में कठिन अवश्य है परन्तु यदि संयम से कर लिया जाए तो बहुत ही प्रभावशाली सिद्ध होता है। समय के अभाव में जो साधक यह करने में असमर्थ में वह यह यंत्र बनाकर रख लें तथा योगिनी महामंत्र की एक माला नित्य जप करें। पूजा के समय यंत्र को गूगुल की धूनी अवश्य दें। इस सरल उपाय से भी कई लोगों को लाभ पहुचा है। मै बार-बार लिख रहा हूँ कि लाभ के पीछे आपके प्रारब्ध का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की 247667 (उ.ख.)
फोन : (01332) 274370
मोः 09760111555
website : www.astrotantra4u.com
E-mail:gopalraju12@yahoo.com